Review Of Research
Vol.1,Issue.VI/March; 12pp.1-4
Dr.Rambir Sharma
ISSN:-2249-894X

Research Papers

1986 से 2010 तक हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा का विकास

Dr.Rambir Sharma
Assistant Professor
University College of
EducationKurukshetra(Haryana)

प्रस्तावनाः–

1966 में जहां माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 735 थी। 1980 तक यह 881 हो गई। 1995 में यह संख्या बढ़कर 1121 हो गई। इसमें 1062 राजकीय विद्यालय तथा 59 अराजकीय विद्यालय थे। इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा के विकास में तेजी आई। 1966 में माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या 73292 थी। 1985–86 में यह संख्या बढ़कर 178556 हो गई। 1966 से 1985 तक माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या में 143.62 प्रतिशत की वृद्धि हुई। मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में भी छात्रों में इसी प्रकार से वृद्धि दर्ज की गई। हरियाणा की साक्षरता दर 2011 के अनुसार 76.60 प्रतिशत दर्ज की गई है जिसमें पुरूष साक्षरता दर 85.40 प्रतिशत व महिला साक्षरता दर 78.50 प्रतिशत है । इस अध्ययन में पाया गया कि माध्यमिक शिक्षा ने 1985–86 के बाद सन्तोषजनक विकास तो किया परन्तु इसमें अपेक्षित तीव्रता नहीं थी । आज भी अनेक गांवों में माध्यमिक विद्यालय नहीं हैं । जनसंख्या में भी तीव्रता से वृद्धि हुई है ।

आज के इस वैज्ञानिक युग में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है । माध्यमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों की संख्या बहुत अधिक है । आज भी गांवों में लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है कि वे अपने बच्चों को महंगे विद्यालयों में शिक्षा दिलवा सकें ।

1900 से पूर्व हरियाणा में शिक्षा का विकास

19वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में हरियाणा क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा की दशा दयनीय थी। इस क्षेत्र में शिक्षा का प्रचार प्रसार बहुत कम था। माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बहुत ही कम थी। 1813 में एक चार्टर एक्ट पास किया गया जिसके तहत कम्पनी सरकार द्वारा शिक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष एक लाख रूपये खर्च करने की बात कही गई। परन्तु इसमें किस शिक्षा पर भारतीय या पाश्चात्य पर इस विषय में विवाद खड़ा हो गया। इसे प्राच्य पाश्चात्य विवाद कहा गया। इस विवाद के कारण यह एक्ट लागू नहीं हो सका। 1854 ई0 मे वुड का घोषणा पत्र आया जिसमें भारत में शिक्षा के प्रचार प्रसार सम्बन्धी योजना बनाई गई कम्पनी के कुछ अधिकारियों और पादरियों ने शिक्षा में रूचि दिखाई और इस क्षेत्र में कार्य करते हुए विद्यालयों की स्थापना की गई।

1900–1966 तक हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा का विकास

20वीं शताब्दी के आरम्भ को भारत में नवजागरण का युग कहा जाता है। इस नवजागरण तथा जागरूकता से हरियाणा क्षेत्र भी अछूता न रहा और शिक्षा में सुधार कार्य शुरू हुआ। 1918 ई0 तक हरियाणा में नए माध्यमिक विद्यालय खुलने की स्थिति अच्छी नहीं थी। 1919 ई0 में इसमें एकदम परिवर्तन आया। इसका सबसे बड़ा कारण था सेना में भर्ती होने लोगों द्वारा शिक्षा के महत्व को पहचानना। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान यहां के हजारों लोग विदेशों में गए और वहां शिक्षा के महत्व को देखा और जाना। इसके परिणामस्वरूप वापिस आने पर उन्होंने यहां के लोगों को भी प्रेरित किया और बच्चों को विद्यालयों में भर्ती करवाने की प्रेरणा दी। इस प्रकार स्वतन्त्रता आन्दोलन से जो जनजागरण हुआ उसने लोगों में शिक्षा के प्रति भी जागरूकता पैदा कर दी। शिक्षा के क्षेत्र में गैर सरकारी और व्यक्तिगत प्रयास भी किए गए। विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संगठनों ने जैसे आर्य समाज, सतातन धर्म, देव समाज, मुस्लिम समुदाय, क्रिश्चियन मिशन और जैन समुदाय द्वाराशिक्षा के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण प्रयास किए गए। इन्हीं दिनों अनेक जातियों ने भी आधुनिकता के प्रभाव में आकर अपने–अपने जातिगत संगठन भी बनाए जैसे जाट महासभा, वैश्य महासभा, अहीर महासभा इत्यादि।

1938–39 में पंजाब ऐजुकेशन रिर्पोट के अनुसार यहां पर माध्यमिक शिक्षा का विकास हुआ। शहरी क्षेत्रों में तथा विशेषतः हरियाणा क्षेत्र में शिक्षा की दशा में धन की कमी बाधक बनी थी न कि शिक्षा के प्रति लोगों की उदासीनता। स्त्री शिक्षा की जरूरत पर भी ध्यान दिया

Please cite this Article as : Dr.Rambir Sharma **,** 1986 से 2010 तक हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा का विकास**: Review of Research (March ; 2012)**

गया परन्तु जब इसकी प्रगति की तुलना पंजाब से करते हैं तो हरियाणा क्षेत्र में यह बड़ी कमजोर दिखाई पड़ती है। दुर्भाग्यवश 1947 में आजादी के समय हरियाणा क्षेत्र में केवल 1.3 प्रतिशत लोग ही साक्षर थे। सन 1947 में स्वतन्त्रता के पश्चात जैसा कि अपेक्षित था स्थिति में एकदम परिवर्तन आया। सरकार ने शिक्षा के प्रचार प्रसार सम्बन्धी कमजोरियों पर ध्यान दिया और शिक्षा के लिए सरकारी बजट का एक बड़ा हिस्सा खर्च किया जाने लगा। 1951–52 में पंचवर्षीय योजनाएं शुरू होने के उपरान्त शिक्षा कीप्रगति में और अधिक तेजी आई। सितम्बर 1952 में माध्यमिक शिक्षा आयोग की नियुक्ति की गई। आयोग की सिफारिश के अनुसार स्थानीय संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे लगभग सभी विद्यालयों को सरकार ने अपने अधीन कर लिया या उनके लिए अनुदान का प्रबन्ध किया गया। परन्तु इतना कार्य होने के बाद भी कुछ क्षेत्र शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े रहे। 1966 में हरियाणा की साक्षरता 19.92 प्रतिशत थी जोकि राष्ट्रीय औसत 27.76 प्रतिशत से कम थी।

1966 से 1985 तक हरियाणा में शिक्षा का विकास

1966 से हरियाणा राज्य स्वतन्त्र रूप से आस्तित्व में आया। हरियाणा की साक्षरता दर राष्ट्रीय साक्षरता दर से कम थी इसलिए राज्य सरकार ने शिक्षा पर बल दिया। हरियाणा राज्य अपने गठन से पूर्व पंजाब का एक अविकसित और पिछड़ा हुआ क्षेत्र था। नया राज्य बनने से यहां के निवासियों में अपने राज्य के चहुमुखी विकास के लिए नई आशा जागृत हुई। यहां के लोगों ने राज्य के विकास के लिए कृषि, उद्योग धन्धे, व्यापार एवं वाणिज्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।1966 में जहां माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 735 थी। 1980 तक यह 881 हो गई। 1995 में यह संख्या बढ़कर 1121 हो गई। इसमें 1062 राजकीय विद्यालय तथा 59 अराजकीय विद्यालय थे। इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा के विकास में तेजी आई। 1966 में माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या 73292 थी। 1985–86 में यह संख्या बढ़कर 178556 हो गई। 1966 से 1985 तक माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या में 143.62 प्रतिशत की वृद्धि हुई।मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में भी छात्रों में इसी प्रकार से वृद्धि दर्ज की गई।

अध्ययन के उद्देश्य :

इस शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

1. हरियाणा की शैक्षिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
2. हरियाणा में हुए माध्यमिक शिक्षा के विकास का अध्ययन करना।
3. हरियाणा के माध्यमिक विद्यालयों के बारे में विशेषकर संख्या से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करना।

आंकड़ों का एकत्रीकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने निदेशक माध्यमिक शिक्षा हरियाणा सांख्यिकी विभाग चण्डीगढ़ हरियाणा, सांख्यिकी विभाग कुरूक्षेत्र से विषय से सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित किए हैं। शोधकर्ता हो हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में जो विकास हुआ है उसके लिए विश्वसनीय एवं वैध आंकड़े प्राप्त करने में काफी सफलता प्राप्त हुई है। शोधकर्ता ने हरियाणा में 1986 से 2010 तक राजकीय और अराजकीय विद्यालयों की संख्या से सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित किए हैं। शोधकर्ता ने प्रयास किया है कि इन आंकड़ों के विश्लेषण से माध्यमिक शिक्षा के विकास का यथासम्भव ज्ञान हो सके।

आंकड़ों के विश्लेषण की विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने आंकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या करने के लिए प्रतिशत सांख्यिकी तकनीकि तथा साधारण गणना विधि का प्रयोग किया है ।

विश्वसनीयता :

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने निदेशक माध्यमिक शिक्षा हरियाणा, सांख्यिकी विभाग कुरूक्षेत्र से आंकड़ों को एकत्रित किया है। इसलिए अध्ययन से सम्बन्धित आंकड़े विश्वसनीय एवं वैध हैं।

आंकड़ों का वर्गीकरण

इस अध्ययन में राजकीय एवं अराजकीय माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा के विकास से सम्बन्धित आंकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या की गई है। हरियाणा में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या, विद्यार्थियों की कुल संख्या, मान्यता प्राप्त विद्यालयों में छात्रों की संख्या, मान्यता प्राप्त विद्यालयों में अनुसूचित जाति व जनजाति के विद्यार्थियों की संख्या को अलग–अलगतालिकाओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन आंकड़ों की सहायता से हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा के विकास का विश्लेषण एवं व्याख्या का प्रयास किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या

आंकड़ों के विश्लेषण की क्रिया का अर्थ है कि तालिका बनाकर उलझे हुए अर्थों को स्पष्ट रूप से प्रकट करना। आंकड़ों का विश्लेषण कार्य हरियाणा में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या, माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या और मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अनुसूचित जाति व जनजाति के विद्यार्थियों की संख्या का पता करना है। आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या अध्ययन में दी गई तालिकाओं में दर्शाया गया है।

Please cite this Article as : Dr.Rambir Sharma , 1986 से 2010 तक हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा का विकास **: Review of Research (March ; 2012)**

तालिका– 2

(हरियाणा राज्य में प्रबन्ध तथा श्रेणियों के अनुसार मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों का वर्गीकरण)

वर्ष	राजकीय विद्यालयों की संख्या	अराजकीय विद्यालयों की संख्या	कुल विद्यालयों की संख्या
1985–86	1062	59	1121
1990–91	1249	150	1399
1995–96	1194	305	1499
2000–01	1211	676	1887
2001–02	1243	927	2170
2002–03	1270	930	2260
2003–04	1332	839	2171
2004–05	1416	853	2269
2005–06	1425	743	2168
2006–07	1540	1033	2573
2009–10	2449	2041	4490

हरियाणा राज्य में वर्ष 1985–86 से 2009–10 तक माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या में 300.53 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। राजकीय विद्यालयों में 130.60 प्रतिशत की वृद्धि हुई और तथा अराजकीय माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में 3359.32 प्रतिशत की वृद्धि हुई। राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा अराजकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अधिक वृद्धि हुई।

तालिका–3

(हरियाणा में माध्यमिक विद्यालयों में श्रेणीवार विद्यार्थियों की संख्या)

वर्ष	छात्र	छात्राएं	कुल योग
1985–86	408991	178566	587557
1990–91	458477	267948	726425
1995–96	477060	340709	817769
2000–01	533181	418313	951494
2001–02	546490	432639	979129
2002–03	563970	535440	1099410
2003–04	604498	485249	1089747
2004–05	656396	528418	1184814
2005–06	633189	526647	1159836
2006–07	668616	575118	1243734
2009–10	625544	620240	1245784

Please cite this Article as : Dr.Rambir Sharma , 1986 से 2010 तक हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा का विकास **: Review of Research (March ; 2012)**

इसी प्रकार हम देखते हैं कि 1985–86 में माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की कुल संख्या 587557 थी। जिसमें लड़के 408991 तथा लड़कियां 178566 थी। यह संख्या 2009–10 में बढ़कर कुल संख्या 1245784 हो गई। इसमें 625544 लड़के तथा 620240 लड़कियां थी। छात्रों की कुल संख्या में 1985–86 की तुलना में 2009–10 तक 112.02 प्रतिशत की वृद्धि हुई। लड़कों की संख्या में इस दौरान 52.95 प्रतिशत तथा लड़कियों की संख्या में 247.34 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इससे पता चलता है कि लोगों में जागृति आई स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान दिया जाने लगा।

तालिका– 4

(हरियाणा राज्य के मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संख्या)

वर्ष	छात्र	छात्राएं	कुल योग
1985–86	43754	26345	70099
1990–91	63359	49247	112606
1995–96	53892	47436	101328
2000–01	23176	18464	41640
2001–02	21090	17273	38364
2002–03	25145	20813	45958
2003–04	28561	26373	54934
2004–05	31785	28190	59975
2005–06	32647	30594	63241
2006–07	81677	73510	155187
2009–10	81784	82118	163902

इसी प्रकार हम देखते हैं कि 1985–86 में हरियाणा के मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में सन् 1985–86 में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संख्या 70099 थी जो 2009–10 तक 163902 हो गई। इसी प्रकार इसमें 133.81 प्रतिशत की वृद्धि हुई। लड़कों की संख्यों 1985–86 में 43754 थी जो 2009–10 में 81784 हो गई। इसमें 86.91 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। लड़कियों की संख्या 1985–86 में 26345 थी जो 2009–10 में बढ़कर 82118 हो गई। लड़कियों की संख्या में 211.71 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

मुख्य परिणामः

प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ता ने आकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात निम्न परिणाम निकाले हैं :–

1.हरियाणा राज्य में 1985–86 में मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 1121 थी। जिनमें 1062 राजकीय तथा 59 अराजकीय विद्यालय थे। 2009–10 में यह संख्या 4490 हो गई जिसमें 2449 राजकीय तथा 2041 अराजकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय थे। इस प्रकार 1986 से 2010 तक माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या में 300.53 प्रतिशत की वृद्धि हुई। राजकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में 1986 की तुलना में 2010 तक 130.60 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। जबकि आराजकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिकविद्यालयों में 3359.32 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इससे पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना कीऔर हरियाणा सरकार ने विशेष ध्यान दिया और माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना में संतोषजनक वृद्धि हुई। राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा अराजकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अधिक वृद्धि दर्जकी गई।

2.हरियाणा राज्य में माध्यमिक विद्यालयों में अर्थात कक्षा 6 से 8वीं तक 1985–86 में छात्रों की कुल संख्या 587557 थी। जिसमें 408991 लड़के तथ 178566 लड़कियां थी। 2009–10 में माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की कुल संख्या 1245784 हो गई। जिसमें 625544 लड़के तथा 620240 लड़कियां थी। माध्यमिक विद्यालयों में कुल छात्रों की संख्या में 1985–86 की तुलना में 2009–10 तक 112.03 प्रतिशत कीवृद्धि हुई। लड़कों की संख्या में 52.95 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि लड़कियों की संख्या में 247.34 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। 1985 के बाद हरियाणा के लागों में जागृति आई। उन्हें महसूसहुआ कि जीवन में शिक्षा अत्यन्त अनिवार्य है। उन्होंने अपने बच्चों काविद्यालय में भेजना आरम्भ कर दिया। हरियाणा राज्य में इस दौरान स्त्री शिक्षा में अत्याधिक वृद्धि हुई। लड़कों की संख्या में 52.95 प्रतिशत की वृद्धि हुई वहीं लड़कियों की संख्या में 247.34 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सरकार ने भी स्त्री शिक्षा के लिए ठोस कदम उठाए।

3.हरियाणा राज्य में मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अनु–सूचित जाति के छात्रों की संख्या 1985–86 में 70099 थी। जिसमें 43754 लड़के तथा 26345 लड़कियां थी। वर्ष 2009–10 अनुसूचित जातियों के छात्रों की संख्या बढ़कर 163902 हो गई जिसमें लड़के 81784 तथा

Please cite this Article as : Dr.Rambir Sharma , 1986 से 2010 तक हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा का विकास **: Review of Research (March ; 2012)**

लड़कियां 82188 थी। मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अनुसूचित जाति के छात्रों की संख्या में वर्ष 1985–86 की तुलना में वर्ष 2009–10 तक 133.81 प्रतिशत की वृद्धि हुई। लड़कों में 86.92 प्रतिशत तथालड़कियों में 211.70 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इस प्रकार देखते हैं कि हरियाणा की अनुसूचित जातियों में भी जागृति आई और शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ा। सरकार ने भी निःशुल्कशिक्षा छात्रवृतियां इत्यादि अनेक सहायताओं द्वारा अनुसूचित जातियों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार हरियाणा राज्य में 1985–86 के बाद माध्यमिक शिक्षा के विभिन्न पक्षों को देखते हुए यह कह सकते हैं कि इसमें संतोषजनकवृद्धि हुई। छात्रों की संख्या बढ़ी साथ ही नए माध्यमिक विद्यालयों की भी स्थापना की गई। 1985–86 के बाद स्त्री शिक्षा की ओर भी विशेषध्यान दिया गया। प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों ने विशेष प्रगति की है। अतः 1985–86 से 2009–10 तक हरियाणा की माध्यमिक शिक्षा ने सन्तोषजनक विकास किया। शोधकर्ताओं ने हरियाणा राज्य की माध्यमिक शिक्षा के विकास का अध्ययन 1985–86 से 2099–10 तक किया। इस अध्ययन में पाया गया कि माध्यमिक शिक्षा ने 1985–86 के बाद सन्तोषजनक विकास तो किया परन्तु इसमें अपेक्षित तीव्रता नहीं थी। आज भी अनेक गांवों में माध्यमिक विद्यालय नहीं हैं। जनसंख्या में भी तीव्रता से वृद्धि हुई है। आज के इस वैज्ञानिक युग में शिक्षा का महत्व औरभी बढ़ जाता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों की संख्या बहुत अधिक है। आज भी गांवों में लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है कि वे अपने बच्चों को महंगे विद्यालयों में शिक्षादिलवा सकें। राजकीय विद्यालयों में अध्यापकों की कमी निरन्तर बनी रहती है ।

4.सुझावः–
वर्ष 1986 से 2010 के दौरान :–

1.अनुसूचित जाति के छात्रों की संख्या में कुल छात्र संख्या के मुकाबले 21.78 प्रतिशत वृद्धि हुई है ।
अनुसूचित जाति के लड़कों में कुल लड़कों के मुकाबले 33.97 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है परन्तु अनुसूचित जाति लड़कियों में कुल लड़कियों के मुकाबले 35.64 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है । अशिक्षित माता–पिता आज भी लड़कियों की शिक्षा को व्यर्थ मानते हैं तथा आरम्भ से ही लड़कियों को घर के कार्यों में लगा देते हैं । इसलिए इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ।

2.हरियाणा के साक्षरता दर 2011 के अनुसार 76.60 प्रतिशत दर्ज की गई है जिसमें पुरूष साक्षरता दर 85.40 प्रतिशत व महिला साक्षरता दर 78.50 प्रतिशत है इससे प्रतीत होता है कि साक्षरता दर वृद्धि में माध्यमिक शिक्षा का भी भरपूर योगदान है । जिसके लिए हरियाणा सरकार कटिबद्ध है ।

3. हरियाणा सरकार ने शिक्षा का मौलिक अधिकार अधिनियम 2009 लागू किया है । जिसके अन्तर्गत 6 से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा दी जायेगी ।हरियाणा सरकार द्वारा इस अधिनियम को 3 जून 2011 अधिसूचित किया गया जिसमें निम्न प्रावधान रखे गये ।
1.ड्रॉपआउट व अनामांकित बच्चों का नामांकन आयु अनुसार किया जाये ।
2.सेतु पाठ्क्रम की व्यवस्था की जाए ।
3.शिक्षकों के विशेष प्रशिक्षण ।
4.प्रवेश हेतु जन्म प्रमाण–पत्र व विद्यालय त्याग प्रमाण पत्र की अनिवार्यता नहीं होगी ।
5.सतत् व व्यापक मूल्यांकन की व्यवस्था की जायेगी ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.सांख्यिकी सारांश निदेशक शिक्षा विभाग हरियाणा, चण्डीगढ़
2.कौल लोकेशमैथडोलोजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च नई दिल्ली, 1984
3.नायक जे.पी.एजुकेशन इन हरियाणा, 1968
4.यादव के.सी.हरियाणा का इतिहास एवं संस्कृति खण्ड–2, नई दिल्ली, 2002
5.कौर कुलदीपएजुकेशन इन इण्डिया, 1981–85चण्डीगढ़, 1986
6.डॉ. मंगल, एस.के. आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षालुधियाना, 1990
7.भारत सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, 1986, 1992

Please cite this Article as : Dr.Rambir Sharma , 1986 से 2010 तक हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा का विकास **: Review of Research (March ; 2012)**